CENTRAL HINDU MILITARY EDUCATION SOCIETY
NASHIK

Our Founder
Dharmaveer Dr. B.S. Moonje

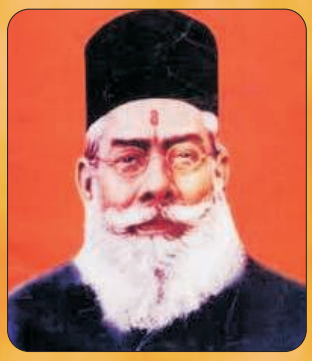

Central Hindu Military Education Society
Bhonsala Bhavan, Rambhoomi, Dr. Moonje Marg
Nashik - 422005 (Maharashtra)
Contact No. 0253 - 2309600 / 01
Email id : ndchmes_b@rediffmail.com

Sardar Swarn singh
Defense minister
visited school

Awati Paying his
tribute to
Dr. B.S.Moonje's
statue.

एक उपेक्षित स्वतंत्रता सेनानी - डॉ. बा.शि. मुंजे

सन १८५७ की सशस्त्र क्रांति को अंग्रेजों ने सफलतापूर्वक कुचल दिया था और उन्होंने सम्पूर्ण भारत पर अपनी पकड मजबूत कर ली थी अंग्रेज शासक अपने शासन की धाक जमाने हेतु नित नये प्रयासों में लगे हुये थे स्वतंत्रता संग्राम के असफल हो जाने से क्रांतिकारी निराश एवं हतोत्साही थे देश की मृतप्राय जनता को जागृत कर उसमें स्वतंत्रता प्राप्त करने हेतु जोश पैदा करने वाले राष्ट्रीय नेतृत्व का अभाव था भारत का राजनीतिक भविष्य अंध्कारमय दिखाई दे रहा था ऐसे समय में एक निर्भय, साहसी, राष्ट्रवादी मातृभक्त और देश की राजनीतिको विशिष्ट दिशा प्रदान करने वाला एक दैदिप्यमान सितारा हिन्दुस्तान के मध्य प्रान्त में स्थित एक छोटे से शहर बिलासपुर (अब यह छत्तीसगढ का प्रमुख शहर है) के आसमान में उदित हुआ जिसका नाम था - बालकृष्ण

बालकृष्ण के पिताजी का नाम था - श्री शिवराम मुंजे नागपुर के राजे रघोजी भोंसले की सेवा में वे थे इनके दादाजी भी भोंसले राजा की सेना में थे अतः भोंसले राजघराने के प्रति कट्टर अभिमान एवं सेनानी वृत्ति आगे चलकर बालकृष्ण की स्वभावगत विशेषता बन गई सन् १८६५ में राजा रघोजी राव की मृत्यु के पश्चात् नागपुर संस्थान खालसा होकर वहां अंग्रजी शासन लागू हो गया इस समय शिवराम जी अंग्रेजी शासन की नौकरी में आये कुछ समय पष्चात् उनका स्थानान्तरण भण्डारा से बिलासपुर हो गया यहीं बालकृष्ण का जन्म ई. १२ दिसम्बर १८७२ में हुआ इनकी माताजी का नाम सौ. राधाबाई था

शिवरामपन्त का परिवार सनातनी था धर्म के प्रति उनकी प्रगाढ निष्ठा थी धर्म के प्रति निष्ठा, धैर्य, दृढ इच्छा शक्ति, निश्चयात्मकता और सुदृढ शरीर आदि वंशानुगत गुणों के साथ - साथ व्यायाम और खेलकूद का शौक बालकृष्ण जी को उनके पिताजी से प्राप्त हुआ बालकृष्ण अत्यंत मातृभक्त थे माता की आज्ञा का पालन करने के लिये वह हर कष्ट सहन के लिये तत्पर रहते थे

Born at Bilaspur (Madhya Pradesh) on 12th Dec. 1872, Dr. B.S Moonje had his school life at Bilaspur and Raipur; and became the Doctor from Grant Medical College Mumbai in 1898. He Participated in Boer war (Africa) in 1899, as a member of medical wing. He gained recognition as the multifaceted personality,Doctor by profession; well versed in shastras and vigorously active politician, later named as "Dharmaveer" Dr. B.S Moonje. His contribution in reference to 'Simon Commission','Budget Provision for Defence','Social Reform' etc.has been proudly acknowledged by society at large. Dr. Moonje, obsessed with idea of our youth in forces and civil services to uphold the integrity and sovereignty of our Motherland, landed in Nashik. In 1935 He established Central Hindu Military Education Society at Nashik at his age of 63 with the aim of Indianisation of Army (Indian Defence) and started 'Bhonsala Military School' in 1937. His divine spirit left for heavenly abode on 4th march 1948.

कठोर पारिवारिक अनुशासन में रहते हुये उन्होंने बिलासपुर में माध्यमिक शिक्षा प्राप्त की फिर हाईस्कूल की शिक्षा प्राप्त करने हेतु रायपुर गये मराठी, अंग्रेजी और संस्कृत भाषा पर उनका प्रभुत्व था साथ ही चित्रकला में भी वे सिध्दहस्त थे

१८९१ में उन्होंने मेट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण की इसी समय उनका विवाह भी हुआ अगली शिक्षा हेतु उन्होंने हिस्लॉप कॉलेज, नागपुर में प्रवेश लिया उन्हें १५ रु. मासिक छात्रवृत्ति मिलती थी परिवार और पढाई के खर्चों को पूरा करने हेतु वे ट्यूशन तथा अन्य छोटे-मोटे कार्य करते थे १८९३ में इण्टर की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद चिकित्सा शास्त्र का अध्ययन करने हेतु उन्होंने मुंबई के ग्रान्ट कॉलेज में दाखिला लिया और १८९८ में एल.एम. एण्ड एस. की परीक्षा उत्तीर्ण की

मुंबई में उन्होंने महानगर पालिका की चिकित्सा शाखा में नौकरी की यहीं उनकी मुलाकात अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियों और राज नेताओं से हुई यहीं वे राजनीति के प्रति भी आकर्षित हुए खेल और व्यायाम के प्रति बचपन से ही उनकी रुचि थी वे इस बात से अच्छी तरह से वाकिफ थे कि अंग्रेजों से लडने के लिये सुदृढ शरीर वाले युवा होना चाहिये इसलिए उन्होंने खेल और व्यायाम के प्रति युवकों को प्रोत्साहित किया और इस हेतु आवश्यक सुविधाएं भी जुटाकर देने लगे साथ ही इस बात को भी वे भलीभंति समझाते थे कि, अंग्रेजों से लडने के लिये अधिक से अधिक भारतीय लोगों को सेना में भर्ती होना चाहिये उन्होंने स्वयं भी अफ्रिका के बोअर युध्द (१८९९-१९००) में भाग लेकर सेना का अनुभव प्राप्त किया

हिन्दुस्तान में सैनिक शिक्षा प्रदान करने वाला विद्यालय प्रारंभ करने हेतु उन्होंने अथक प्रयास किये ब्रिटेन, जर्मनी, रुस आदि के सैनिक स्कूलों को प्रत्यक्ष भेंट देकर वहा की पध्दति की बारिकियों को सीखा और उन्हें भारतीय परिवेश के अनुकूल ढालकर अपने महत्वाकांक्षी स्वप्न पूर्ति हेतु उन्होंने १९३५ में दि सेन्ट्रल हिन्दू मिलिटरी एज्यूकेशन सोसायटी स्थापित की १५ जून १९३७ में संस्था व्दारा स्थापित भोंसला सैनिक

Baboo Jagjivanram defense minister observing parade at bhonsala military school

Air Cheif Marshal Om Prakash Mehra at annual day function

Hon. Shri. Atal Bihari Bajpayee inspecting the annual day parade 1994.

Jiwajirao Scindia during bhoomi poojan of bhonsala military school

विद्यालय नासिक (महाराष्ट्र) में विधिवत् प्रारंभ हुआ इसका औपचारिक उद्घाटन कार्यक्रम दि. २६ मार्च १९३८ में ग्वालियर की सिंधिया रियासत के महाराजा श्रीमंत जीवाजी राव के करकमलों व्दरारा सम्पन्न हुआ इस विद्यालय में हर भाषा भाषी विद्यार्थी को प्रवेश दिया गया साथ ही देश के विभिन्न स्थानों जैसे लाहौर, सिंध, दिल्ली, कराची, काठियावाड, त्रिपुरा, विजयनगरम आदि से छात्रों को प्रवेश दिया गया इससे छात्रों की प्रान्तीयता की भावना खत्म होकर हिन्दुस्तान के प्रति एकता की भावना उनमें विकसित हो यही उद्देश्य था यह विद्यालय आज भी अपनी विकसित अवस्था में आधुनिक शिक्षण एवं प्रशिक्षण देने में सफलतापूर्वक कार्यरत् है इस विद्यालय की भूरी - भूरी प्रशंसा तत्कालीन मुंबई के अंग्रेज गवर्नर सर ब्रेबॉर्न तथा कर्नल वियर ने भी की थी

धर्म और कर्तव्य निष्ठा उनके जीवन का स्थायी भाव था अपनी बात वह निडरता पूर्वक रखते थे अपने वैयक्तिक दु:खदर्द को सार्वजनिक कार्य में कभी बाधा नहीं बनने दिया अपने दामाद की मृत्यु के नौंवे दिन से उन्होंने विभिन्न स्थानों पर परिषदों की अध्यक्षता की कौन्सिल चुनावों के समय उनके लाडले नाती का निधन हुआ था ऐसे अतीव दु:खद अवसर पर भी वे डगमगाये नहीं और उसका अंतिम संस्कार कर सीधे मतदान केन्र पर गये और मतदान समाप्ति तक वहीं डटे रहे

असहयोग आंदोलन को बीच में ही रोक देने पर उन्होंने गांधी जी की साफ शब्दें में आलोचना की थी उनके दायित्व से पीढे हटने को डॉ. मुंजे जी ने स्वीकार नहीं किया था इस संबंध में उनके मुंबई नगर पालिका में प्लेग के समय अपने अधीनस्थ मुसलमान कर्मचारी की गलती को स्वयं पर लेकर उसे दोषमुक्त कराने का उदाहरण उनके दायित्व पालन की विशेषता को स्पष्ट करने हतु काफी है गोलमेज परिषद् में भी उन्होंने मोहम्मद अली जिन्ना व्दारा प्रस्तुत सत्ता के हस्तांरण के प्रस्ताव का स्पष्ट विरोध किया और जिन्ना तथा गांधी के जातीय प्रतिनिधित्व की मांग और स्वतंत्र मतदार संघ के खिलाफ मोर्चा खोल दिया हिन्दुओं को संगठित करने के लिये भी उन्होंने अथक प्रयास किये हिन्दू

The Chief Guest Rajmata Vijaya Raje Scindia MP, Inaugurated the Senior College of CHME Society.

Hon. Chief Guest Field Marshal Manekshaw

उनको हर प्रकार का सहयोग भी देते थे डॉ. मुंजे जी ने इसके चलते ही डॉ. हेडगेवार जी को क्रांतिकारियों से मिलने कलकत्ता भेजा था

मध्य प्रान्त और विदर्भ में काँग्रेस के गरम दल का अर्थात् तिलक जी के विचारों का प्रचार प्रसार करने का कार्य डॉ. मुंजे जी ने सफलतापूर्वक किया इतना ही नहीं नागपुर के काँग्रेस अधिवेशन को भी उन्होंने सफल बनाया इस अधिवेशन को काँग्रेस का क्रांतिकारी अधिवेशन माना जाता है

साहित्य के क्षेत्र में उनका स्वतंत्र रुप से कोई योगदान नहीं है वैसे वे सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक कार्यों में इतने अधिक सक्रीय एवं व्यस्त रहे कि उन्हें लिखने हेतु खाली समय नहीं मिल पाया उनके लेखन में उल्लेखनीय है तो उनके १९२५ से १९४८ तक लिखे गये रोजनामचे उन्होंने नेत्र चिकित्सा पर संस्कृत में ग्रंथ लिखने का अधुरा प्रयास किया अपने नेत्र चिकित्सा के शोध एवं अनुभव के आधार पर एक सिध्दांत भी उन्होंने प्रतिपादित किया परंतु उनके समकालीन स्मिथ नामक अंग्रेज ने भी यही सिध्दांत प्रतिपादित किया अंग्रेज होने के कारण यह सिध्दांत स्मिथ- थिअरी के नाम से प्रसिध्द हुआ

इस प्रकार अपने निजी एवं सामाजिक -धार्मिक तथा राजनीतिक क्षेत्र में अपनी मृत्यु पर्यन्त तक सक्रीय रहने वाले इस विशाल व्यक्तित्व ने कभी किसी मान-सम्मान की अपेक्षा नहीं की राष्ट्रीय कार्य के लिये उन्होंने अपना सर्वस्व दान कर दिया किन्तु उनके व्दारा किये गये महान कार्यों की उपेक्षा की गई वे सच्चे अर्थों में एक स्वतंत्रता सेनानी थे देश की एकता और अखंडता के लिये उन्होंने कोई समझौता नहीं किया देशव्यापी संगठनों की स्थापना की हिन्दुओं को संगठित और शक्तिशाली बनाने के लिये उन्होंने सफलतम प्रयास किये किन्तु किसी भी बात का श्रेय उन्हें प्रदान नहीं किया गया

महासभा गठित करने में भी उन्होंने महत्वपूर्ण योगदान दिया वे अच्छी तरह जानते थे कि जब तक हिन्दू समाज संगठित नहीं होता और शक्तिशाली नहीं बनता तब तक उसके समक्ष आने वाली समस्याएं सुलझने वाली नहीं है इस सभा के माध्यम से उन्होंने अस्पृश्यता निवारण, शुध्दिकरण (जबरन धर्मांतरीत व्यक्तियों को पुनः हिन्दू बनाना) आदि कार्य उन्होंने प्रारंभ किये मालाबार में मुसलमानों व्दारा किये गये जान्य अत्याचारों का स्वयं अवलोकन कर सरकार को इसके खिलाफ सख्त कदम उठाने को बाध्य किया और हिन्दुओं को संगठित होने के लिये प्रेरित किया हिन्दू धर्म शास्त्र पर धर्म ग्रन्थ लिखवाने हेतु भी उन्होंने प्रयास किये

हिन्दू संस्कृति के प्रचार तथा धर्म के प्रति लोगों को जागरुक करने के लिये उन्होंने कीर्तन तथा हरिदास सम्प्रदाय के पुनरुत्थान के लिये अथक प्रयास किये इतना ही नहीं उन्होंने राष्ट्रीय कीर्तन सम्मेलन का आयोजन भी किया

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक प.पू. डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार जी को उन्होंने पुत्रवत् पाल पोसकर शिक्षित किया इतना ही नहीं वरन् उन्हें राष्ट्र कार्य हेतु भी तैयार किया जब हेडगेवार जी ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की तब डॉ. मुंजे जी ने ही उन्हें मार्गदर्शन तथा पूर्ण सहयोग प्रदान किया था

डॉ. मुंजे जी काँग्रेस के सक्रीय सदस्य थे किन्तु काँग्रेस के उग्रवादी दल (गरम दल) के पक्ष में थे उस समय काँग्रेस में नरम दल तथा गरम दल ऐसा विभाजन था फिरोजशाह मेहता, गोपाल कृष्ण गोखले, महात्मा गांधी आदि नरम दल के थे यह दल सरकार का सहयोग कर अपनी राजनीतिक मांगों को पूर्ण करने में विश्वास रखता था जब कि गरम दल के सदस्य सरकारी नीतियों का, अत्याचारों का विरोध कर सत्ता के हस्तांतरण की बात करता था लोकमान्य तिलक, सावरकर जी आदि इस दल के सदस्य थे इस दल की क्रांतिकारियों के साथ न केवल सहानुभूति थी वरन् वे

Bajirao Peshawe Bhavan was inaugurated at the hands of the Chief Guest Gen. Arunkumar S. Vaidya MVC, AVSM

Vice admiral Pasricha on his visit to the School

यदि वे अपने समकालीन नेतृत्व की चाटुकारिता करते, उनकी हां में हां मिलाते तो शायद स्थिति भिन्न होती परन्तु इसके विपरित उन्होंने तिलक जी, सावरकर जी का हाथ थामा जिन्हें स्वयं काँग्रेस ने तिरस्कृत किया और तो और उन्होंने हिन्दू महासभा की स्थापना की तथा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान देकर काँग्रेसी नेतृत्व की नाराजगी ओढ ली इसके साथ ही वे कहीं राष्ट्रीय नेतृत्व में न गिने जाये इसलिए काँग्रेस की रीतिनीति ने उन्हें प्रदेश तक सीमित रखकर उनके व्दारा किये गये राष्ट्रीय स्तर के कार्यों की उपेक्षा की वास्तव में जिस राष्ट्रीय सम्मान के वे पात्र थे वह उन्हें कभी मिला ही नहीं जबकि अनेक कुपात्र एवं उनसे निम्न दर्जे के कई नेताओं को इस देश में बडे-बडे सम्मान प्रदान किये गये है

डॉ. मुंजे की विचारों की प्रासंगिकता वर्तमान समय में भी है हिन्दु अपने ही देश में कुण्ठाग्रस्त जीवन बिताने के लिये बाध्य किया जा रहा है उसकी संस्कृति पर आक्रमण किया जा रहा है इसलिए हिन्दुओं को संगठित होने की, शक्तिशाली होने की आज भी तीव्र आवश्यकता है यदि हिन्दुस्तानी लोग यह कर लेंगे तो यही डॉ. बालकृष्ण शिवराम मुंजे जी को सच्ची श्रध्दांजली होगी और इससे बडा दूसरा कोई सम्मान उनके लिये नहीं हो सकता

जय हिन्द !

V.I.P's visited in Bhonsala Military School

Late Pt. Jawaharlal Nehru Prime Minister of India with Principal Shri H.K.Mokashi.

Shankaracharya Jagatguru Jayendra Saraswati (Kanchi Kamkoti) at bhoomi pujan of ram mandir in premises.